International Journal of Research in Finance and Management

P-ISSN: 2617-5754
E-ISSN: 2617-5762
IJRFM 2023; 6(1): 254-262
www.allfinancejournal.com
Received: 01-01-2023
Accepted: 06-02-2023

डॉ0 एस0 सी0 सिंघल
एसोसिएट प्रोफेसर, वाणिज्य संकाय, के0 आर0 पी0 जी0 कॉलेज, मथुरा, उत्तर प्रदेश, भारत

Correspondence
डॉ0 एस0 सी0 सिंघल
एसोसिएट प्रोफेसर, वाणिज्य संकाय, के0 आर0 पी0 जी0 कॉलेज, मथुरा, उत्तर प्रदेश, भारत

कार्यशील पूंजी प्रबंधन का लाभप्रदता पर प्रभाव: भारत में कुछ प्रमुख फार्मा कंपनियों के संदर्भ में

डॉ0 एस0 सी0 सिंघल

DOI: https://doi.org/10.33545/26175754.2023.v6.i1c.217

सारांश
कार्यशील पूंजी प्रबंधन कंपनी की मौजूदा संपत्तियों (जैसे नकदी, इन्वेंट्री और प्राप्य खातों) और वर्तमान देनदारियों (जैसे देय खातों) के प्रबंधन को संदर्भित करता है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि कंपनी के पास अपने अल्पकालिक दायित्वों को पूरा करने और इसे चलाने के लिए पर्याप्त संसाधन हैं। संचालन प्रभावी ढंग से। प्रभावी कार्यशील पूंजी प्रबंधन, तरलता में सुधार, वित्तपोषण लागत को कम करने, संसाधनों का अधिक कुशलता से उपयोग करने और नकदी प्रवाह में सुधार करके कंपनी की लाभप्रदता पर सकारात्मक प्रभाव डाल सकता है। हालांकि, यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि अलग-अलग कंपनियों की उनके उद्योग, व्यवसाय मॉडल और विकास के चरण के आधार पर अलग-अलग कार्यशील पूंजी की जरूरत हो सकती है। इसलिए, इष्टतम कार्यशील पूंजी प्रबंधन रणनीति कंपनी से कंपनी में भिन्न हो सकती है।

कूटशब्द: कार्यशील पूंजी प्रबंधन, नकदी, इन्वेंट्री, प्राप्य खातों

प्रस्तावना
कार्यशील पूंजी प्रबंधन एक कंपनी की अल्पकालिक संपत्ति और देनदारियों के प्रबंधन की प्रक्रिया है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि उसके पास अपने अल्पकालिक दायित्वों को पूरा करने और अपने संचालन को प्रभावी ढंग से चलाने के लिए पर्याप्त तरलता है। कार्यशील पूंजी प्रबंधन के मुख्य घटक वर्तमान संपत्ति (जैसे नकद, सूची और प्राप्य खाते) और वर्तमान देनदारियां (जैसे खाते देय और अल्पकालिक ऋण) हैं। प्रभावी कार्यशील पूंजी प्रबंधन में संसाधनों के उपयोग को अनुकूलित करने और लागत को कम करने की इच्छा के साथ पर्याप्त तरलता बनाए रखने की आवश्यकता को संतुलित करना शामिल है। इसके लिए सावधानीपूर्वक योजना और नकदी प्रवाह, इन्वेंट्री स्तर और ग्राहक और आपूर्तिकर्ता संबंधों की निगरानी की आवश्यकता है। कार्यशील पूंजी प्रबंधन के लिए कुछ सामान्य रणनीतियों में शामिल हैं:

1. नकद प्रबंधन: इसमें यह सुनिश्चित करने के लिए नकदी प्रवाह और बहिर्वाह का प्रबंधन शामिल है कि कंपनी के पास अपने दायित्वों को पूरा करने के लिए पर्याप्त नकदी है। रणनीतियों में ग्राहकों से तेजी से संग्रह करना, आपूर्तिकर्ताओं को भुगतान में देरी करना और नकदी की जरूरतों का अनुमान लगाने के लिए नकद पूर्वानुमान उपकरण का उपयोग करना शामिल हो सकता है।

2. इन्वेंटरी प्रबंधन: इसमें यह सुनिश्चित करने के लिए इन्वेंट्री स्तरों का प्रबंधन शामिल है कि कंपनी के पास वहन लागत को कम करते हुए ग्राहकों की मांग को पूरा करने के लिए पर्याप्त इन्वेंट्री है। रणनीतियों में समय-समय पर इन्वेंट्री प्रबंधन का उपयोग करना, ऑर्डर की मात्रा का अनुकूलन करना और धीमी गति से चलती या अप्रचलित इन्वेंट्री की पहचान करना शामिल हो सकता है।

3. खाता प्राप्य प्रबंधन: इसमें यह सुनिश्चित करने के लिए बकाया ग्राहक भुगतानों के संग्रह का प्रबंधन शामिल है कि कंपनी को समय पर भुगतान प्राप्त हो। रणनीतियों में शुरुआती भुगतान के लिए छूट की पेशकश करना, ग्राहक की साख का आकलन करने के लिए क्रेडिट चेक का उपयोग करना और अतिदेय खातों के लिए संग्रह एजेंसियों या कानूनी कार्रवाई का उपयोग करना शामिल हो सकता है।

4. देय खातों का प्रबंधन: इसमें यह सुनिश्चित करने के लिए आपूर्तिकर्ताओं को बकाया बिलों के भुगतान का प्रबंधन करना शामिल है कि कंपनी अच्छे आपूर्तिकर्ता संबंध बनाए रखती है और देर से भुगतान दंड से बचती है।

रणनीतियों में आपूर्तिकर्ताओं के साथ भुगतान की शर्तों पर बातचीत करना, आपूर्तिकर्ता संबंधों के आधार पर भुगतान को प्राथमिकता देना और भुगतान को सुव्यवस्थित करने के लिए इलेक्ट्रॉनिक भुगतान प्रणाली का उपयोग करना शामिल हो सकता है।

कुल मिलाकर, एक कंपनी के वित्तीय स्वास्थ्य के लिए प्रभावी कार्यशील पूंजी प्रबंधन आवश्यक है। अल्पकालिक संपत्तियों और देनदारियों के उपयोग को अनुकूलित करके, कंपनी अपनी तरलता में सुधार कर सकती है, लागत कम कर सकती है और लाभप्रदता को अधिकतम कर सकती है।

कार्यशील पूंजी प्रबंधन और लाभप्रदता

कार्यशील पूंजी प्रबंधन एक कंपनी की अल्पकालिक संपत्ति और देनदारियों के प्रबंधन को संदर्भित करता है। यह महत्वपूर्ण हैक्योंकि यह सीधे कंपनी की तरलता, लाभप्रदता और सॉल्वेंसी को प्रभावित करता है। प्रभावी कार्यशील पूंजी प्रबंधन से कंपनी को अपनी लाभप्रदता में सुधार करने में मदद मिल सकती है, जबकि अप्रभावी प्रबंधन का विपरीत प्रभाव हो सकता है। कार्यशील पूंजी प्रबंधन कंपनी की मौजूदा संपत्तियों (जैसे नकद, सूची, और प्राप्य खाते) और वर्तमान देनदारियों (जैसे खाते देय और अल्पकालिक ऋण) के प्रबंधन को संदर्भित करता है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि कंपनी के पास अपनी कम अवधि दायित्वों को पूरा करने के लिए पर्याप्त नकदी प्रवाह है। प्रभावी कार्यशील पूंजी प्रबंधन का कंपनी की लाभप्रदता पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ सकता है। यहाँ कुछ तरीके दिए गए हैं जिनसे यह लाभप्रदता को प्रभावित कर सकता है:

- **बेहतर नकदी प्रवाह:** कार्यशील पूंजी के कुशल प्रबंधन से कंपनी को एक स्वस्थ नकदी प्रवाह बनाए रखने में मदद मिल सकती है, जो संचालन के वित्तपोषण और विकास के अवसरों में निवेश करने के लिए आवश्यक है। इन्वेंट्री को नकदी में बदलने और प्राप्य खातों को इकट्ठा करने में लगने वाले समय को कम करके, कंपनी अपने नकदी रूपांतरण चक्र में सुधार कर सकती है और अन्य उपयोगों के लिए नकदी मुक्त कर सकती है।
- **कम लागत:** प्रभावी कार्यशील पूंजी प्रबंधन भी इन्वेंट्री स्तर को अनुकूलित करके, आपूर्तिकर्ताओं के साथ बेहतर भुगतान शर्तों पर बातचीत करके, और अल्पकालिक उधारी की आवश्यकता को कम करके लागत को कम करने में मदद कर सकता है। लागत कम करके, एक कंपनी अपनी निचली रेखा में सुधार कर सकती है और लाभप्रदता बढ़ा सकती है।
- **बिक्री में वृद्धि:** यह सुनिश्चित करके कि कंपनी के पास मांग को पूरा करने के लिए पर्याप्त इन्वेंट्री है और ग्राहकों को अनुकूल ऋण शर्तों की पेशकश करके, प्रभावी कार्यशील पूंजी प्रबंधन बिक्री और राजस्व बढ़ाने में मदद कर सकता है। यह, बदले में, उच्च लाभ का कारण बन सकता है।
- **बेहतर निवेश निर्णय:** प्रभावी कार्यशील पूंजी प्रबंधन किसी कंपनी को उसकी नकदी प्रवाह की जरूरतों और अल्पकालिक दायित्वों में अंतर्दृष्टि प्रदान करके बेहतर निवेश निर्णय लेने में मदद कर सकता है। यह कंपनी को उन निवेशों को प्राथमिकता देने में मदद कर सकता है जो सकारात्मक प्रतिफल उत्पन्न करने की संभावना रखते हैं और ऐसे निवेशों से बचते हैं जो इसके नकदी प्रवाह को प्रभावित कर सकते हैं।
- **दक्षता में वृद्धि:** अपनी कार्यशील पूंजी प्रबंधन प्रथाओं का अनुकूलन करके, एक कंपनी अपने संचालन में अधिक कुशल बन सकती है। उदाहरण के लिए, अपने खातों को देय और प्राप्य प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करके, एक कंपनी इन गतिविधियों को प्रबंधित करने के लिए आवश्यक समय और प्रयास को कम कर सकती है, संसाधनों को व्यवसाय के अन्य क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए मुक्त कर सकती है।
- **बढ़ी हुई तरलता:** प्रभावी कार्यशील पूंजी प्रबंधन भी कंपनी की तरलता को बढ़ा सकता है। अपने अल्पकालिक दायित्वों को पूरा करने के लिए हाथ में पर्याप्त नकदी होने से, एक कंपनी अपने दायित्वों को पूरा करने के लिए अतिरिक्त ऋण लेने या संपत्ति बेचने की आवश्यकता से बच सकती है, जो महंगा हो सकता है और लाभप्रदता को कम कर सकता है।
- **कम वित्त पोषण लागत:** अपने कार्यशील पूंजी प्रबंधन को अनुकूलित करके, एक कंपनी बाहरी वित्तपोषण की अपनी आवश्यकता को कम कर सकती है, जिससे इसकी वित्तपोषण लागत कम हो सकती है और इसकी लाभप्रदता में सुधार हो सकता है।
- **संसाधनों का कुशल उपयोग:** प्रभावी कार्यशील पूंजी प्रबंधन एक कंपनी को अपने संसाधनों (जैसे इन्वेंट्री और प्राप्य खाते) का अधिक कुशलता से उपयोग करने में मदद कर सकता है, जो संबंधित वहन लागत को कम कर सकता है और लाभप्रदता में सुधार कर सकता है।
- **बेहतर नकदी प्रवाह:** प्रभावी कार्यशील पूंजी प्रबंधन ग्राहकों से संग्रह में तेजी लाकर, आपूर्तिकर्ताओं को भुगतान में देरी करके और इन्वेंट्री स्तर को कम करके कंपनी को अपने नकदी प्रवाह में सुधार करने में मदद कर सकता है। यह कंपनी को अपने संचालन में पुनर्निवेश करने या शेयरधारकों को वापस करने के लिए अधिक नकदी प्रदान कर सकता है।
- प्रभावी कार्यशील पूंजी प्रबंधन लागत कम करके, नकदी प्रवाह में सुधार करके, दक्षता बढ़ाकर और तरलता बढ़ाकर कंपनी की लाभप्रदता पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकता है। कुल मिलाकर, प्रभावी कार्यशील पूंजी प्रबंधन कंपनी को लागत कम करने, बिक्री बढ़ाने और बेहतर निवेश निर्णय लेने के द्वारा अपनी लाभप्रदता में सुधार करने में मदद कर सकता है। हालांकि, समय के साथ स्थायी लाभप्रदता सुनिश्चित करने के लिए कार्यशील पूंजी के प्रबंधन और दीर्घकालिक विकास के अवसरों में निवेश के बीच संतुलन बनाना महत्वपूर्ण है।

लाभप्रदता पर कार्यशील पूंजी प्रबंधन के प्रभाव का विश्लेषण

लाभप्रदता पर कार्यशील पूंजी प्रबंधन के प्रभाव का विश्लेषण कई प्रमुख मैट्रिक्स के माध्यम से किया जा सकता है, जिनमें शामिल हैं:

1. नकद रूपांतरण चक्र (सीसीसी): सीसीसी उस समय को मापता है जो किसी कंपनी को इन्वेंट्री और प्राप्य में अपने निवेश को नकद में परिवर्तित करने में लगता है। एक छोटा सीसीसी कार्यशील पूंजी के कुशल प्रबंधन को दर्शाता है और उच्च लाभप्रदता से जुड़ा है।

2. सकल लाभ मार्जिन (जीपीएम): जीपीएम बिक्री राजस्व का प्रतिशत मापता है जो बेची गई वस्तुओं की लागत से अधिक है। कुशल कार्यशील पूंजी प्रबंधन से उच्च जीपीएम हो सकता है क्योंकि यह इन्वेंट्री रखने और प्राप्तियों को प्रबंधित करने से जुड़ी लागत को कम करता है।

3. रिटर्न ऑन एसेट्स (आरओए): आरओए लाभ उत्पन्न करने के लिए कंपनी की संपत्ति के उपयोग की दक्षता को मापता है। कुशल कार्यशील पूंजी प्रबंधन गैर-उत्पादक संपत्तियों जैसे इन्वेंट्री और प्राप्य में बंधी पूंजी की मात्रा को कम करके कंपनी के आरओए में सुधार कर सकता है।

4. रिटर्न ऑन इक्विटी (आरओई): आरओई शेयरधारकों के लिए निवेश पर रिटर्न को मापता है। प्रभावी कार्यशील पूंजी प्रबंधन गैर-उत्पादक संपत्तियों में बंधे पूंजी की मात्रा को कम करके कंपनी के आरओई में सुधार कर सकता है, जिसे बाद में अधिक लाभदायक अवसरों में निवेश किया जा सकता है।

अध्ययन में अंतराल

- ऐसे बहुत कम अध्ययन हैं जहां कंपनियों के प्रदर्शन को मापने के लिए बड़ी संख्या में वित्तीय चरों को एक साथ लिया गया है।

- प्रदर्शन को आम तौर पर वित्तीय प्रदर्शन के संदर्भ में मापा जाता है। प्रदर्शन के मानवीय पहलुओं जैसे कर्मचारी संतुष्टि और ग्राहकों की संतुष्टि को नजरअंदाज कर दिया गया है।
- बहुत कम अध्ययन उपलब्ध हैं जिन्होंने भारत में बैंकों के कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) को मात्रात्मक रूप में मापा है।
- ऐसा कोई व्यापक मॉडल उपलब्ध नहीं है जो कंपनियों के समग्र प्रदर्शन को मापने के लिए वित्तीय और मानवीय दोनों पहलुओं को एक साथ लेता हो।

शोध प्रक्रिया (Research Process) -

- **शोध विधि (Research Method)** – प्रस्तुत शोध विधि के प्रमुख चरणों में समस्या के लिए विश्लेषण, संग्रहीत जानकारी का समीक्षण, हिपोथिसिस विकसित करना, विश्लेषण के लिए विधियों का चयन, अनुभवों और तथ्यों का अध्ययन, और उपलब्ध जानकारी का उपयोग किया गया है।
- **न्यादर्श (Sample);** प्रस्तुत शोध पत्र में फार्मेसी कंपनियों के वित्तीय चरों का का ५ वर्षों का अध्ययन किया गया है।
- **उपकरण (Tools):** प्रस्तुत शोध अध्ययन में आँकड़ों के संकलन हेतु निम्नलिखित उपकरणों का प्रयोग किया गया है -

1. फार्मेसी कंपनियों के वित्तीय चरों का वार्षिक अध्ययन
2. अभिलेखों का अध्ययन
3. प्रमुख वित्तीय मापदंड का अवलोकन

चर (Variables) - प्रस्तुत शोध में चरों का वर्गीकरण निम्नानुसार किया गया है

1. **स्वतंत्र चर** – निफ़्टी फिफ्टी के अनुसार भारत के प्रमुख फार्मेसी कंपनियां
2. **परतंत्र चर -** नकद रूपांतरण चक्र (सीसीसी), सकल लाभ मार्जिन (जीपीएम), रिटर्न ऑन एसेट्स (आरओए), रिटर्न ऑन इक्विटी (आरओई)

सांख्यिकीय विश्लेषण (Statistical Operations): प्रस्तुत शोध में सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु मध्यमान एवं प्रतिशत की गणना की गयी।

निफ़्टी फिफ्टी के अनुसार भारत के प्रमुख फार्मेसी कंपनियां

1. **सन फार्मास्युटिकल इंडस्ट्रीज लिमिटेड मुंबई,:** सन फार्मास्युटिकल इंडस्ट्रीज लिमिटेड मुंबई, भारत में स्थित एक बहुराष्ट्रीय दवा कंपनी है। इसकी स्थापना 1983 में दिलीप सांघवी द्वारा की गई थी, जो भारत के सबसे धनी व्यक्तियों में से एक हैं और देश के दवा उद्योग में एक प्रमुख उद्यमी हैं। कंपनी का संचालन 100 से अधिक देशों में है और यह दुनिया के सबसे बड़े जेनेरिक दवा निर्माताओं में से एक है। सन फार्मास्युटिकल इंडस्ट्रीज लिमिटेड जेनेरिक दवाओं, ब्रांडेड दवाओं और ओवर-द-काउंटर दवाओं सहित फार्मास्युटिकल उत्पादों की एक विस्तृत श्रृंखला का उत्पादन करती है। कंपनी अनुसंधान और विकास पर अपना ध्यान केंद्रित करने के लिए जानी जाती है, और ऑन्कोलॉजी, कार्डियोलॉजी और न्यूरोसाइंस के क्षेत्रों में नए उत्पादों की एक मजबूत पाइपलाइन है। अपने फार्मास्युटिकल उत्पादों के अलावा, सन फार्मास्युटिकल इंडस्ट्रीज लिमिटेड की रिवाइटल और वोलिनी जैसे ब्रांडों के साथ उपभोक्ता स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में महत्वपूर्ण उपस्थिति है।
2. **डॉ. रेड्डीज लैबोरेटरीज लिमिटेड हैदराबाद:** डॉ. रेड्डीज लैबोरेटरीज लिमिटेड हैदराबाद, भारत में स्थित एक बहुराष्ट्रीय दवा कंपनी है। इसकी स्थापना 1984 में डॉ अंजी रेड्डी द्वारा की गई थी, जो भारत के फार्मास्यूटिकल उद्योग में एक प्रमुख वैज्ञानिक और उद्यमी थे। कंपनी का 25 से अधिक देशों में संचालन है और जेनेरिक दवाओं, ब्रांडेड दवाओं और ओवर-द-काउंटर दवाओं सहित फार्मास्युटिकल उत्पादों की एक विस्तृत श्रृंखला का उत्पादन करती है। डॉ. रेड्डीज लैबोरेटरीज लिमिटेड अनुसंधान और विकास पर विशेष रूप से कैंसर, मधुमेह, हृदय रोगों और जठरांत्र संबंधी विकारों के क्षेत्रों में अपने ध्यान के लिए जाना जाता है। इसके पास नए उत्पादों की एक मजबूत पाइपलाइन है, और दुनिया भर के रोगियों के लिए अभिनव उपचार लाने के लिए अनुसंधान और विकास में भारी निवेश करती है।
3. **अल्केम लेबोरेटरीज लिमिटेड मुंबई,:** अल्केम लेबोरेटरीज लिमिटेड मुंबई, भारत में स्थित एक बहुराष्ट्रीय दवा कंपनी है। इसकी स्थापना 1973 में सम्प्रदा सिंह और बसुदेव सिंह द्वारा की गई थी, जो दोनों भारत के फार्मास्युटिकल उद्योग के प्रमुख उद्यमी थे। कंपनी का 50 से अधिक देशों में संचालन है और जेनेरिक दवाओं, ब्रांडेड दवाओं और ओवर-द-काउंटर दवाओं सहित फार्मास्युटिकल उत्पादों की एक विस्तृत श्रृंखला का उत्पादन करती है। अल्केम लेबोरेटरीज लिमिटेड विशेष रूप से ऑन्कोलॉजी, कार्डियोलॉजी, न्यूरोलॉजी और गैस्ट्रोएंटरोलॉजी के क्षेत्रों में अनुसंधान और विकास पर ध्यान केंद्रित करने के लिए जाना जाता है। इसके पास नए उत्पादों की एक मजबूत पाइपलाइन है, और दुनिया भर के रोगियों के लिए अभिनव उपचार लाने के लिए अनुसंधान और विकास में भारी निवेश करती है।
4. **ल्यूपिन लिमिटेड मुंबई, :** ल्यूपिन लिमिटेड मुंबई, भारत में स्थित एक बहुराष्ट्रीय दवा कंपनी है। इसकी स्थापना 1968 में देश बंधु गुप्ता ने की थी, जो भारत के फार्मास्युटिकल उद्योग के एक प्रमुख उद्यमी थे। कंपनी का 100 से अधिक देशों में संचालन है और जेनेरिक दवाओं, ब्रांडेड दवाओं और ओवर-द-काउंटर दवाओं सहित फार्मास्युटिकल उत्पादों की एक विस्तृत श्रृंखला का उत्पादन करती है। ल्यूपिन लिमिटेड विशेष रूप से त्वचाविज्ञान, श्वसन, हृदय और केंद्रीय तंत्रिका तंत्र विकारों के क्षेत्रों में अनुसंधान और विकास पर ध्यान केंद्रित करने के लिए जाना जाता है। इसके पास नए उत्पादों की एक मजबूत पाइपलाइन है, और दुनिया भर के रोगियों के लिए अभिनव उपचार लाने के लिए अनुसंधान और विकास में भारी निवेश करती है।
5. **ग्लैक्सोस्मिथक्लाइन फार्मास्यूटिकल्स लिमिटेड (जीएसके):** ग्लैक्सोस्मिथक्लाइन फार्मास्यूटिकल्स लिमिटेड (जीएसके) ग्लैक्सोस्मिथक्लाइन पीएलसी की सहायक कंपनी है, जो यूनाइटेड किंगडम में स्थित एक वैश्विक दवा कंपनी है। जीएसके फार्मास्यूटिकल्स लिमिटेड की स्थापना भारत में 1924 में हुई थी और यह भारतीय दवा उद्योग में अग्रणी खिलाड़ियों में से एक बन गया है। जीएसके फार्मास्युटिकल्स लिमिटेड दवा उत्पादों की एक विस्तृत श्रृंखला का उत्पादन करती है, जिसमें नुस्खे वाली दवाएं, टीके और उपभोक्ता स्वास्थ्य संबंधी उत्पाद शामिल हैं। कंपनी के उत्पाद पोर्टफोलियो में श्वसन, ऑन्कोलॉजी, इम्यूनोलॉजी और संक्रामक रोगों जैसे विभिन्न चिकित्सीय क्षेत्रों के लिए दवाएं शामिल हैं। जीएसके फार्मास्यूटिकल्स लिमिटेड अनुसंधान और विकास पर ध्यान केंद्रित करने के लिए जाना जाता है, और इसने नए उत्पादों की एक मजबूत पाइपलाइन के निर्माण में काफी निवेश किया है। कंपनी की भारतीय बाजार में एक मजबूत उपस्थिति है और भारत में स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में इसके योगदान के लिए मान्यता प्राप्त है। अपने फार्मास्युटिकल उत्पादों के अलावा, जीएसके फार्मास्यूटिकल्स लिमिटेड डायग्नोस्टिक परीक्षण, चिकित्सा उपकरणों और पोषण संबंधी उत्पादों सहित कई स्वास्थ्य सेवाएं भी प्रदान करता है।
6. **ग्लेनमार्क फार्मास्युटिकल्स लिमिटेड मुंबई :** ग्लेनमार्क फार्मास्युटिकल्स लिमिटेड मुंबई, भारत में मुख्यालय वाली एक प्रमुख दवा कंपनी है। कंपनी की स्थापना 1977 में ग्रेसियस सल्दान्हा द्वारा एक जेनेरिक दवा और सक्रिय दवा सामग्री निर्माता के रूप में की गई थी। आज, ग्लेनमार्क दुनिया भर में 80 से अधिक देशों में मौजूद है और इसका एक विविध उत्पाद पोर्टफोलियो है जिसमें श्वसन, त्वचाविज्ञान, ऑन्कोलॉजी और अन्य जैसे विभिन्न चिकित्सीय खंड शामिल हैं। ग्लेनमार्क के भारत, स्विट्जरलैंड और संयुक्त

राज्य अमेरिका में कई अनुसंधान और विकास केंद्र हैं, और नवाचार और नई दवाओं के विकास पर इसका विशेष ध्यान है। कंपनी को फार्मास्युटिकल उद्योग में अपने योगदान के लिए कई पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं, जिनमें प्रतिष्ठित फ्रॉस्ट एंड सुलिवन इंडिया फार्मास्युटिकल इंडस्ट्री एक्सीलेंस अवार्ड शामिल है। फार्मास्यूटिकल्स के अलावा, ग्लेनमार्क ने अपने ब्रांड "कैंडिड" के साथ उपभोक्ता स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में भी कदम रखा है, जो त्वचा देखभाल उत्पादों की एक श्रृंखला पेश करता है।

डेटा विश्लेषण और परिणाम व्याख्या

लाभांश {Return on Equity} %: एक उच्च आरओई मूल्य लगभग 20-30% हो सकता है, यह दर्शाता है कि कंपनी अपने शेयरधारक निवेशों से महत्वपूर्ण लाभ कमा रही है। दूसरी ओर, एक कम आरओई मूल्य लगभग 5-10% हो सकता है, जो यह सुझाव दे सकता है कि कंपनी निवेशित शेयरधारक इक्विटी की तुलना में पर्याप्त लाभ नहीं कमा रही है। हालाँकि, आरओई का उच्च या निम्न मूल्य क्या माना जाता है, यह कंपनी के ऐतिहासिक प्रदर्शन और उद्योग के बेंचमार्क पर भी निर्भर करता है।

तालिका 1: अध्ययनरत फार्मा कंपनियों के लिए लाभांश का 5 वर्षों का अनुकलन

वित्तीय चरों	लाभांश {Return on Equity} %				
फार्मेसी कंपनियों /वर्ष	2022	2021	2020	2019	2018
सन फार्मास्युटिकल इंडस्ट्रीज लिमिटेड	13.9	12.8	9.1	9.1	7.2
डॉ. रेड्डीज लैबोरेटरीज लिमिटेड	10.7	11.2	13.4	13.8	7.6
अल्केम लेबोरेटरीज लिमिटेड	18.5	23.7	21.3	15.2	15.5
ल्यूपिन लिमिटेड मुंबई	-12.1	9.7	-3.1	3.6	1.7
ग्लैक्सोस्मिथक्लाइन फार्मास्यूटिकल्स लिमिटेड	17.5	26.2	10.6	20.4	17
ग्लेनमार्क फार्मास्युटिकल्स लिमिटेड मुंबई	13.2	15.1	11.3	12.9	15.7

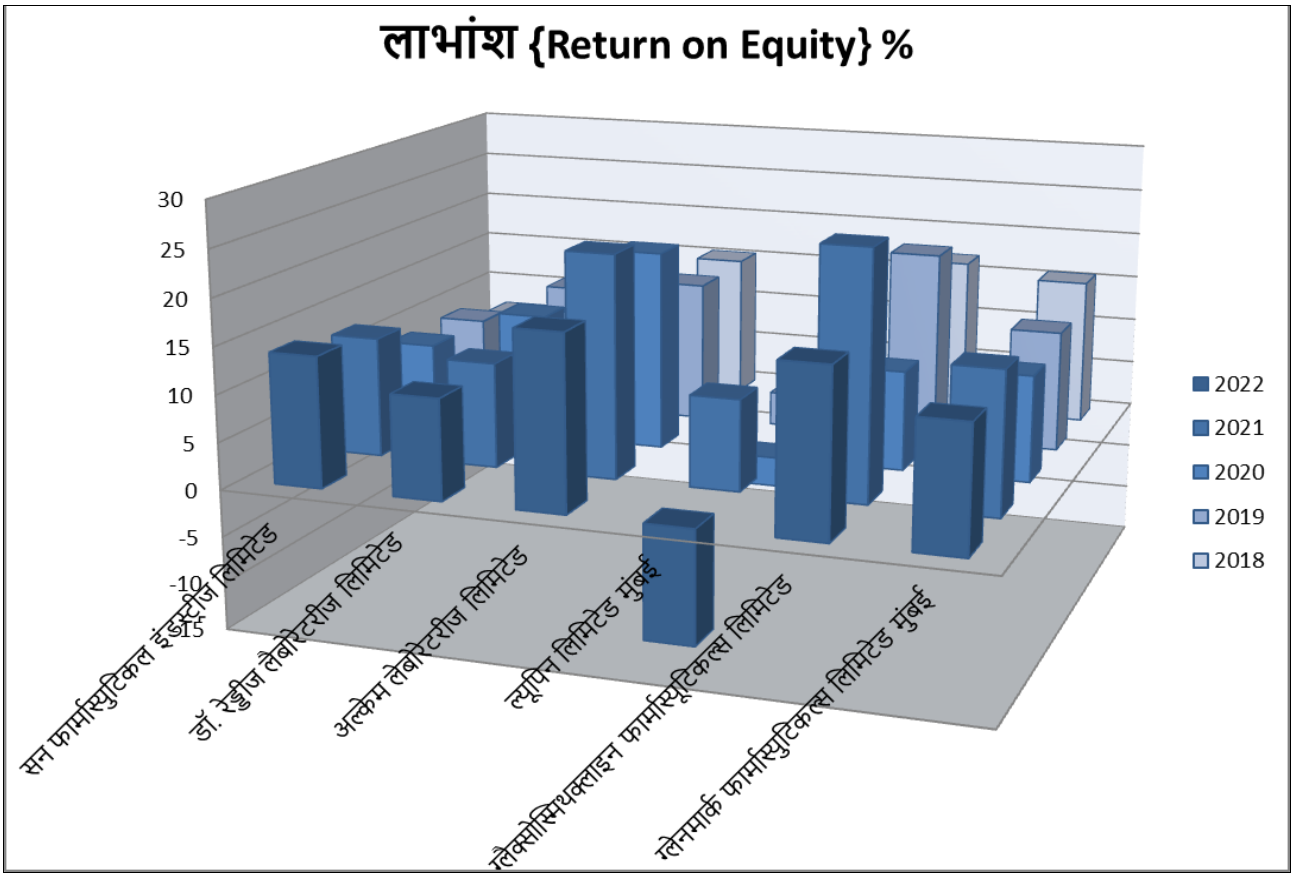

इष्टतम लाभ मार्जिन {Optimum Profit Margin} %: सामान्य तौर पर, एक उच्च लाभ मार्जिन वांछनीय है, क्योंकि यह इंगित करता है कि व्यवसाय अपनी लागतों के सापेक्ष महत्वपूर्ण मुनाफा कमा रहा है। हालाँकि, अत्यधिक उच्च लाभ मार्जिन भी चिंता का कारण हो सकता है, क्योंकि वे संकेत दे सकते हैं कि व्यवसाय ग्राहकों से अधिक शुल्क ले रहा है या प्रतिस्पर्धी-विरोधी प्रथाओं में संलग्न है। इसके विपरीत, कम लाभ मार्जिन यह संकेत दे सकता है कि व्यवसाय मुनाफा कमाने के लिए संघर्ष कर रहा है या बाजार में कड़ी प्रतिस्पर्धा का सामना कर रहा है। हालांकि, कुछ उद्योगों, जैसे खुदरा, में आमतौर पर बिक्री की उच्च मात्रा और प्रतिस्पर्धात्मक रूप से उत्पादों की कीमत की आवश्यकता के कारण कम लाभ मार्जिन होता है। इष्टतम लाभ मार्जिन के विशिष्ट उच्च और निम्न मूल्य उद्योग और प्रतिस्पर्धी परिदृश्य के आधार पर अलग-अलग होंगे। उदाहरण के लिए, फार्मास्युटिकल उद्योग के लिए औसत लाभ मार्जिन आमतौर पर किराना उद्योग की तुलना में अधिक होता है। इसी तरह, अत्यधिक प्रतिस्पर्धी बाजार में काम करने वाले व्यवसाय में कम प्रतिस्पर्धी बाजार में काम करने वाले व्यवसाय की तुलना में कम इष्टतम लाभ मार्जिन हो सकता है।

तालिका 2: अध्ययनरत फार्मा कंपनियों के लिए इष्टतम लाभ मार्जिन का 5 वर्षों का अनुकलन

वित्तीय चरों	इष्टतम लाभ मार्जिन {Op. Profit Mgn} %				
फार्मेसी कंपनियों /वर्ष	2022	2021	2020	2019	2018
सन फार्मास्युटिकल इंडस्ट्रीज लिमिटेड	26.5	25.3	21.3	22.1	21.1
डॉ. रेड्डीज लैबोरेटरीज लिमिटेड	17.5	20.3	14.1	20.6	16.5
अल्केम लेबोरेटरीज लिमिटेड	20.5	27	22.2	18.4	18.9
ल्यूपिन लिमिटेड मुंबई	1.3	17.5	14.7	16	19.9
ग्लैक्सोस्मिथक्लाइन फार्मास्यूटिकल्स लिमिटेड	23.4	20.5	20.8	19.4	17.9
ग्लेनमार्क फार्मास्युटिकल्स लिमिटेड मुंबई	18.9	19.7	16	16.1	17.8

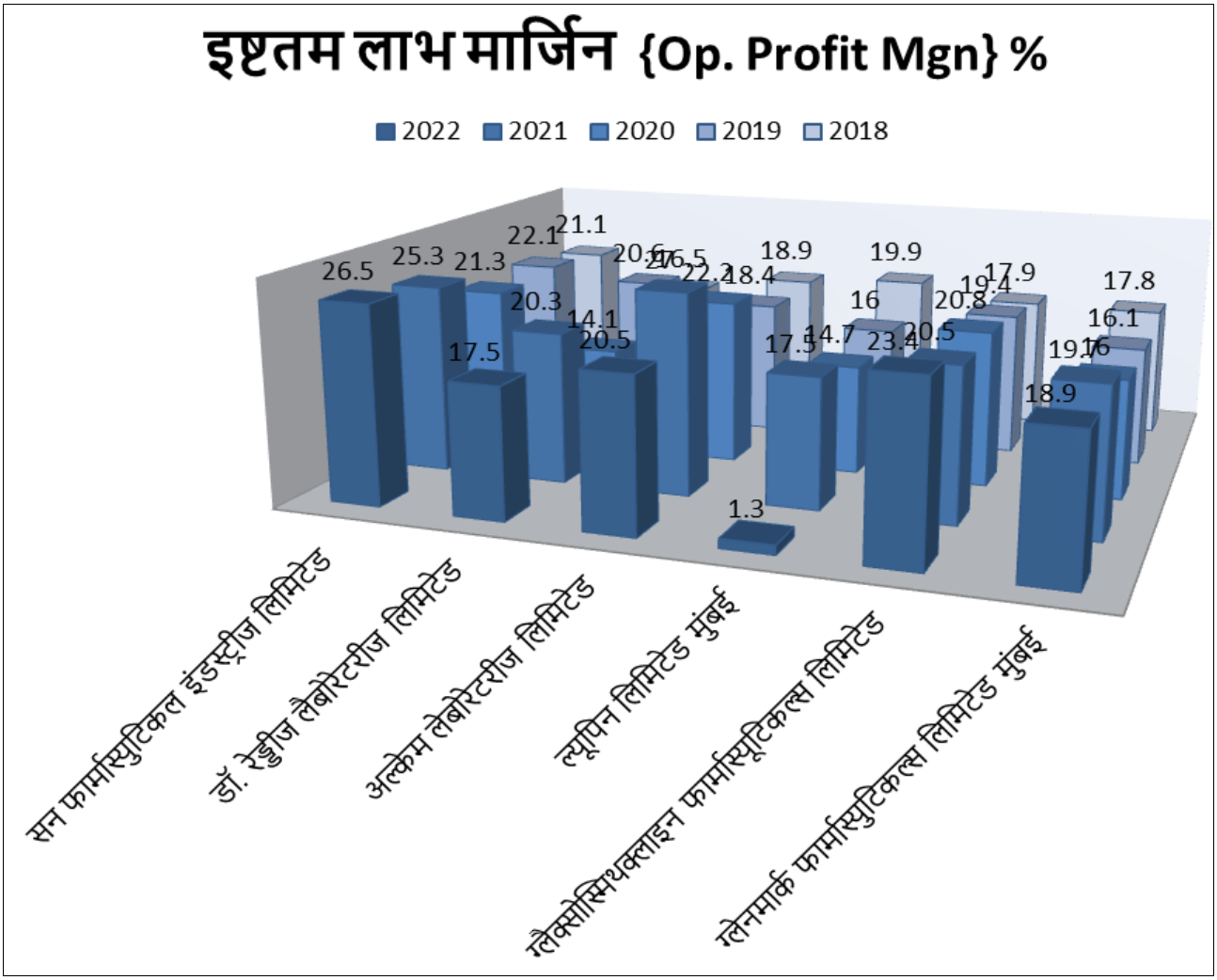

शुद्ध लाभ मार्जिन {Net Profit Mgn} %: सामान्य तौर पर, एक उच्च एनपीएम वांछनीय है क्योंकि यह इंगित करता है कि कंपनी अपनी बिक्री से अधिक लाभ कमा रही है। हालाँकि, अत्यधिक उच्च एनपीएम यह भी संकेत दे सकता है कि कंपनी अपने ग्राहकों से अधिक शुल्क ले रही है या लंबी अवधि में विकास को बनाए रखने के लिए व्यवसाय में पर्याप्त निवेश नहीं कर रही है। इसके विपरीत, कम एनपीएम यह संकेत दे सकता है कि कंपनी मुनाफा कमाने के लिए संघर्ष कर रही है या उच्च लागत का सामना कर रही है, जो निवेशकों के लिए चिंता का विषय हो सकता है। हालांकि, कुछ उद्योगों, जैसे खुदरा, में आमतौर पर प्रतिस्पर्धात्मक रूप से उत्पादों की कीमत की आवश्यकता के कारण एनपीएम कम होता है। एनपीएम के विशिष्ट उच्च और निम्न मूल्य उद्योग और कंपनी के आकार के आधार पर अलग-अलग होंगे।

तालिका 3: अध्ययनरत फार्मा कंपनियों के लिए शुद्ध लाभ मार्जिन का 5 वर्षों का अनुकलन

वित्तीय चरों	शुद्ध लाभ मार्जिन {Net Profit Mgn} %				
फार्मेसी कंपनियों /वर्ष	2022	2021	2020	2019	2018
सन फार्मास्युटिकल इंडस्ट्रीज लिमिटेड	17.4	15.7	13.2	14.3	12.1
डॉ. रेड्डीज लैबोरेटरीज लिमिटेड	9.2	9.8	11.3	11.9	6.4
अल्केम लेबोरेटरीज लिमिटेड	17.2	22.9	18.7	13.8	13.7
ल्यूपिन लिमिटेड मुंबई	-9.5	8.5	-2.4	3	1.5
ग्लैक्सोस्मिथक्लाइन फार्मास्यूटिकल्स लिमिटेड	11.1	14.8	6.5	13.7	12
ग्लेनमार्क फार्मास्युटिकल्स लिमिटेड मुंबई	9.1	9.1	6.2	6.9	8.3

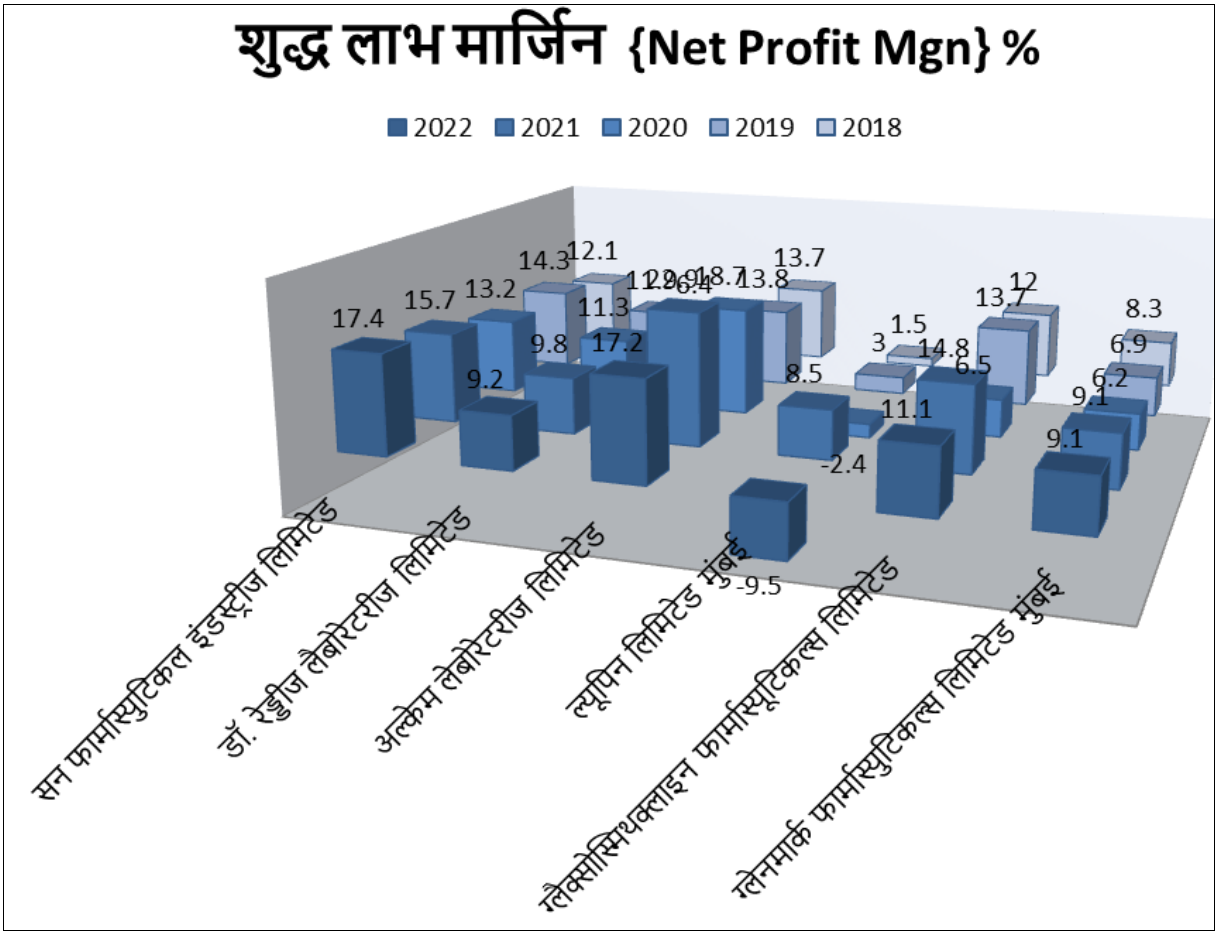

कार्यशील पूंजी दिवस {Working Cap Days}: सामान्य तौर पर, कम कार्यशील पूंजी दिवस वांछनीय है क्योंकि यह इंगित करता है कि कंपनी बिक्री उत्पन्न करने के लिए अपनी कार्यशील पूंजी का कुशलता से उपयोग कर रही है। एक उच्च कार्यशील पूंजी दिवस यह संकेत दे सकता है कि कंपनी अपनी कार्यशील पूंजी का कुशलता से प्रबंधन नहीं कर रही है, जिससे नकदी प्रवाह के मुद्दे और संभावित वित्तीय कठिनाइयां हो सकती हैं। कार्यशील पूंजी दिवसों के विशिष्ट उच्च और निम्न मूल्य उद्योग और कंपनी के आकार के आधार पर अलग-अलग होंगे।

तालिका 4: अध्ययनरत फार्मा कंपनियों के लिए कार्यशील पूंजी दिवस का 5 वर्षों का अनुकलन

वित्तीय चरों	कार्यशील पूंजी दिवस {Working Cap Days}				
फार्मेसी कंपनियों /वर्ष	2022	2021	2020	2019	2018
सन फार्मास्युटिकल इंडस्ट्रीज लिमिटेड	136	146	148	154	163
डॉ. रेड्डीज लैबोरेटरीज लिमिटेड	216	213	207	214	222
अल्केम लेबोरेटरीज लिमिटेड	178	176	156	159	162
ल्यूपिन लिमिटेड मुंबई	129	138	430	142	141
ग्लैक्सोस्मिथक्लाइन फार्मास्यूटिकल्स लिमिटेड	140	147	340	601	625
ग्लेनमार्क फार्मास्युटिकल्स लिमिटेड मुंबई	88	88	201	217	236

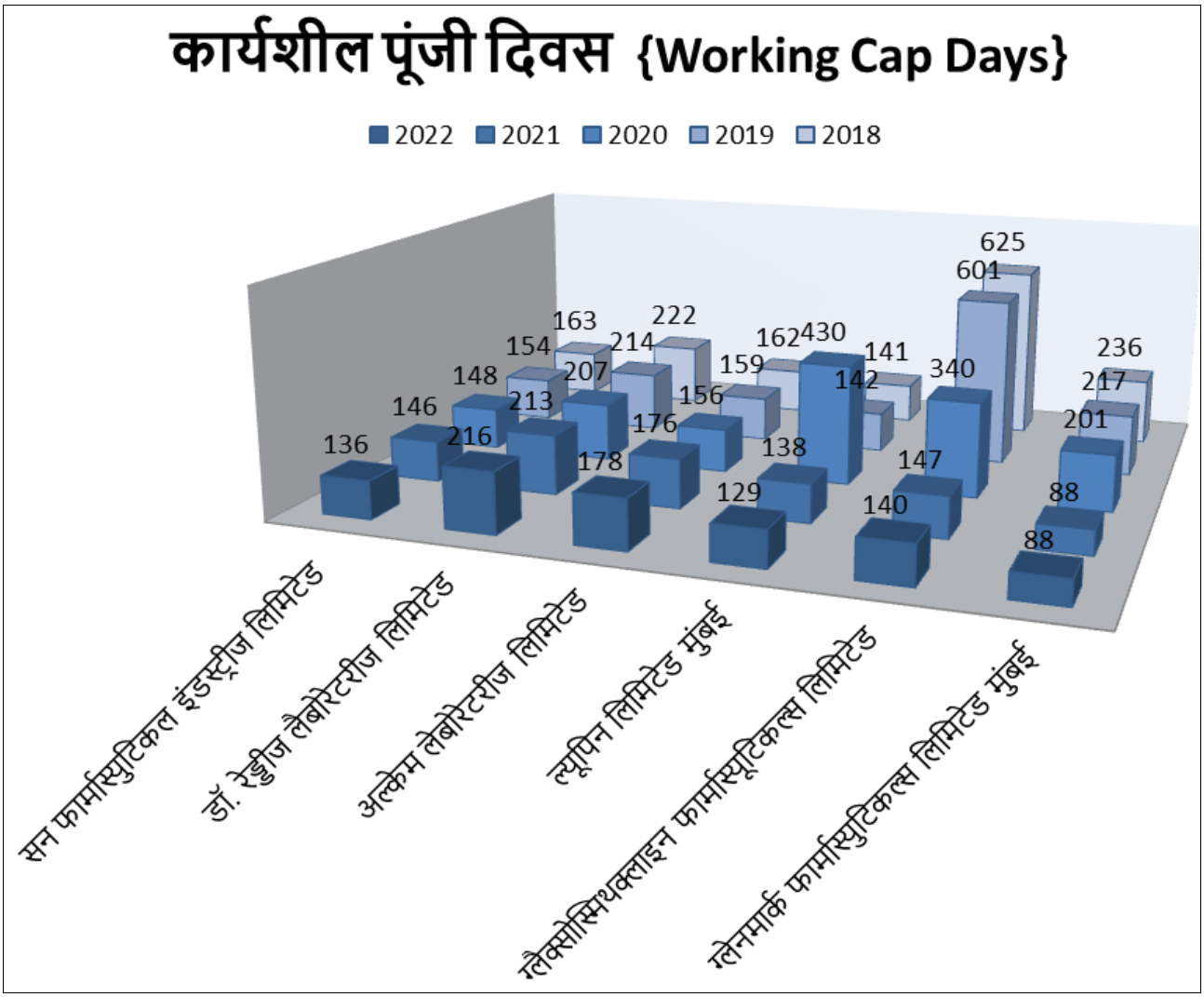

नकद रूपांतरण चक्र {Cash Conv. Cycle}: नकद रूपांतरण चक्र एक मीट्रिक है जो किसी कंपनी को अपने संसाधनों को नकदी प्रवाह में बदलने में लगने वाले समय का प्रतिनिधित्व करता है। इसकी गणना कंपनी की इन्वेंट्री टर्नओवर अवधि, प्राप्य संग्रह अवधि और देय आस्थगित अवधि को जोड़कर की जाती है। नकद रूपांतरण चक्र के उच्च और निम्न मूल्य उद्योग और कंपनी के आकार के आधार पर भिन्न हो सकते हैं। सामान्य तौर पर, एक कम नकद रूपांतरण चक्र वांछनीय है क्योंकि यह इंगित करता है कि कंपनी कुशलता से अपनी कार्यशील पूंजी का प्रबंधन कर रही है और अपने संसाधनों को जल्दी से नकदी में परिवर्तित कर रही है। एक उच्च नकद रूपांतरण चक्र यह संकेत दे सकता है कि कंपनी नकदी प्रवाह के मुद्दों का सामना कर रही है, जो इसके संचालन और बढ़ने की क्षमता को प्रभावित कर सकती है।

तालिका 5: अध्ययनरत फार्मा कंपनियों के लिए नकद रूपांतरण चक्र का 5 वर्षों का अनुकलन

वित्तीय चरों	**नकद रूपांतरण चक्र {Cash Conv. Cycle}**				
फार्मेसी कंपनियों /वर्ष	2022	2021	2020	2019	2018
सन फार्मास्युटिकल इंडस्ट्रीज लिमिटेड	46	49	48	27	17
डॉ. रेड्डीज लैबोरेटरीज लिमिटेड	135	132	126	130	137
अल्केम लेबोरेटरीज लिमिटेड	80	76	62	51	45
ल्यूपिन लिमिटेड मुंबई	44	46	38	50	52
ग्लैक्सोस्मिथक्लाइन फार्मास्यूटिकल्स लिमिटेड	-3	13	7	0	12
ग्लेनमार्क फार्मास्युटिकल्स लिमिटेड मुंबई	-21	-28	56	66	82

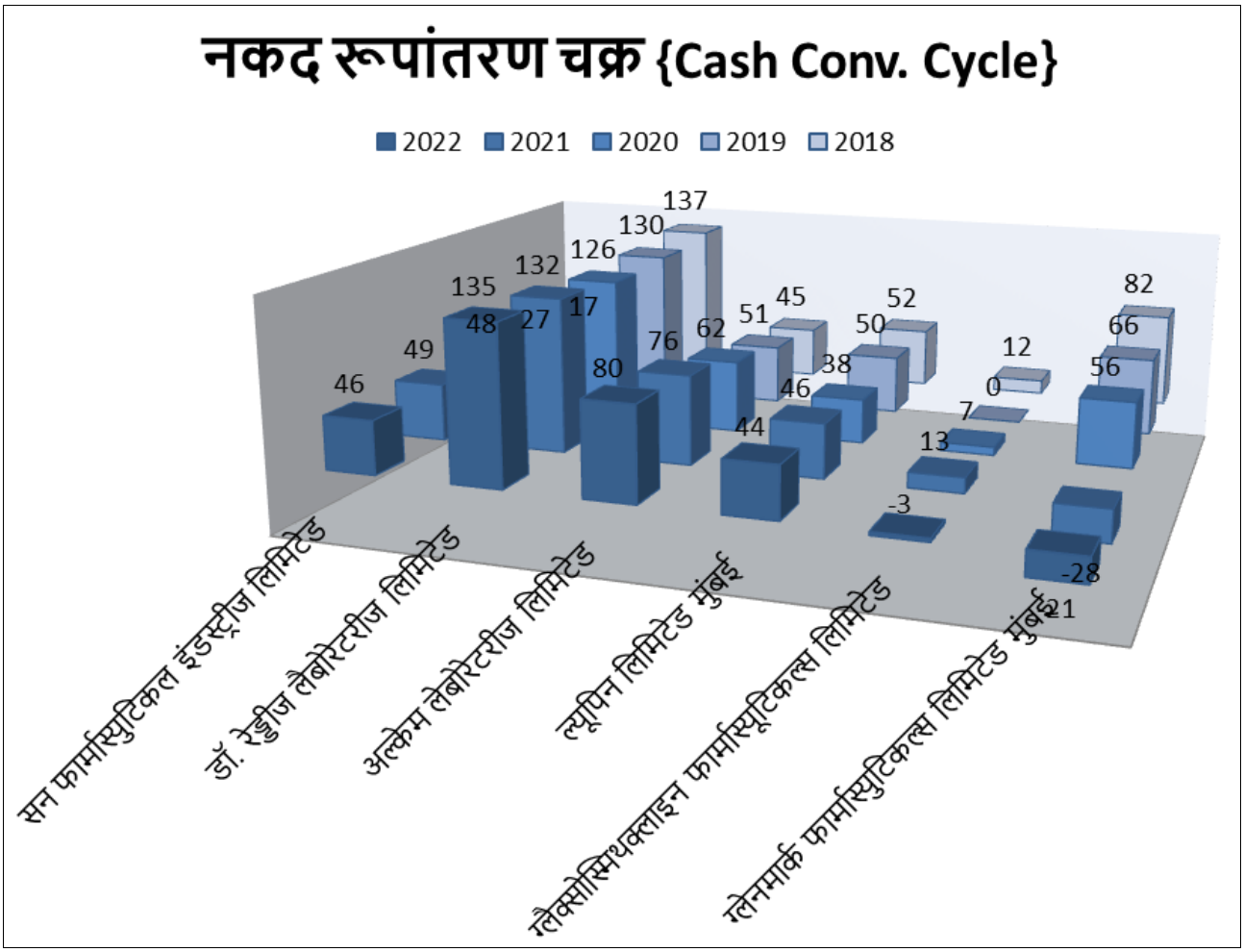

निष्कर्ष

कुशल कार्यशील पूंजी प्रबंधन का किसी कंपनी के नकदी प्रवाह में सुधार, लागत में कमी और परिसंपत्ति उपयोग की दक्षता में वृद्धि के द्वारा कंपनी की लाभप्रदता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। हालांकि, यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि लाभप्रदता पर कार्यशील पूंजी प्रबंधन का प्रभाव उद्योग, बाजार की स्थितियों और अन्य कारकों के आधार पर भिन्न हो सकता है।

संदर्भ

1. सिंह एस, अरोड़ा आर। सार्वजनिक, निजी और विदेशी बैंकों में बैंकिंग सेवाओं और ग्राहकों की संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन। जे अर्थशास्त्र। 2011;2(1):45-56।
2. पगुरा एम, कर्स्टन एम। औपचारिक-अनौपचारिक वित्तीय संबंध: विकासशील देशों से सबक। लघु उद्यम विकास। 2006;17(1):16-29।
3. शर्मा ए, मेहता वी। वित्तीय सेवाओं में सेवा की गुणवत्ता की धारणा-बैंकिंग सेवाओं का एक केस अध्ययन। सेवा अनुसंधान जर्नल। 2004;4(2):205।
4. रेड्डी डीएम, प्रसाद के. क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों के प्रदर्शन का मूल्यांकन: कैमल मॉडल का एक अनुप्रयोग। शोधकर्ताओं की दुनिया। 2011;2(4):61।
5. चौधरी के, शर्मा एम. भारतीय सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों और निजी क्षेत्र के बैंकों का प्रदर्शन: एक तुलनात्मक अध्ययन। नवाचार, प्रबंधन और प्रौद्योगिकी के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल। 2011;2(3):249।
6. सिंह देओल एच. सामरिक वातावरण और भारतीय बैंकों की बौद्धिक पूंजी। जर्नल ऑफ इंटेलेक्चुअल कैपिटल। 2009;10(1):109-20।
7. तुली आर, खत्री ए, यादव ए. एसबीआई और आईसीआईसीआई बैंक के एटीएम के प्रति ग्राहकों के रवैये का तुलनात्मक अध्ययन। विपणन और प्रौद्योगिकी के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल। 2012;2(8):463।
8. मल्होत्रा पी, सिंह बी. भारत में इंटरनेट बैंकिंग पेशकशों और इसके निर्धारकों का विश्लेषण। इंटरनेट अनुसंधान। 2010;20(1):87-106।
9. बोस एस, गुप्ता एन। सर्वक्वाल आयामों के आधार पर सेवाओं की ग्राहक धारणा: भारतीय वाणिज्यिक बैंकों का एक अध्ययन। सेवा विपणन त्रैमासिक। 2013;34(1):49-66।
10. शर्मा ई, मणि एम. कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व: भारतीय वाणिज्यिक बैंकों का एक विश्लेषण। एआईएमए जर्नल ऑफ मैनेजमेंट एंड रिसर्च। 2013;7(1/4):0974-497।
11. गोयल के, जोशी वी. भारत के बैंकिंग उद्योग में विलय: कुछ उभरते मुद्दे। एशियन जर्नल ऑफ बिजनेस एंड मैनेजमेंट साइंसेज। 2011;1(2):157-65।
12. चंद्र पी. वित्तीय प्रबंधन: टाटा मैकग्रा-हिल एजुकेशन; 2011.
13. विज एम. मैनेजिंग गैप: ए केस स्टडी अप्रोच टू एसेट-लायबिलिटी मैनेजमेंट ऑफ बैंक्स। दृष्टि। 2005;9(1):49-58।